मन दर्पण



मुरली गोविंदाणी

मन - दर्पण

गीत

ग़ज़ल

मुक्तक

मुरली गोविन्दाणी

मन - दर्पण

(गीत - ग़ज़ल मुक्तक)

कवि : मुरली एन. गोविन्दाणी

पता : एस. ए. एक्स-34,
आदीपुर (कच्छ) गुजरात-370205.

फोन : (02836) 261150

प्रकाशन वर्ष : 2009

प्रतियां : 500 (पांच सौ)

मूल्य : 70/- रुपये

मुद्रक : स्केन कमप्यूर्टस
३, राधेश्याम अपार्टमेंट, पाटिया,
नरोडा रोड, अहमदाबाद-382340.
फोन : 30246776 मो. 9327007002

कवर चित्र : मुकेश तिलोकाणी आदीपुर
मो. 9376895437

प्रकाशन एवं : मुरली एन. गोविन्दाणी
वितरण अधिकार मो. 9898409415

हिन्दी साहित्य अकादमी - गुजरात, गांधीनगर
की आर्थिक सहायता से प्रकाशित

प्रस्तावना :

श्री **मुरली गोविन्दानी** के अनुरोध पर उनके प्रकाश्य काव्य-संकलन **'मन-दर्पण'** की प्रस्तावना लिखने बैठा हूं। आँखो के आगे एक दृश्य उभर आया है। काव्य का एक अगाध सागर हिलोरें मार रहा है। सागर के किनारे काव्य-रसिकों का मेला लगा हुआ है। रसिक जनोंने यह ज़िद पकड़ ली है कि आज हम सागर की गहराइयों में गोता लगाएंगे, यह पता लगायेंगे कि आख़िर यह सागर कितना गहरा है! शोर मचा हुआ है। सागर की गहराई जानने के कई उपाय किये जा रहे हैं। इतने में उस सागर के किनारे दो नमक के पुतले आ पहुँचे। नमक के उन पुतलों ने पूछा क्या बात है ? उन्हें बताया गया कि सागर की गहराई जानने के प्रयास किये जा रहे हैं। नमक के पुतलों ने कहा : यह काम हम करके दिखाएंगे। लोग हैरत में पड़ गये ये नमक के पुतले कैसे सागर की गहराई नापेंगे? लेकिन नमक के पुतले बोले हम अभी बतला देते हैं कि सागर की गहराई कितनी है और दोनों नमक के पुतलों ने सागर में छलांग लगा दी! लोग देखते ही रह गये। लोग राह देखते बैठे हैं कि नमक के पुतले लौटेंगे और उन्हें सागर की गहराई बतायेंगे! कौन लौटा है! दिन बीत गये, सप्ताह बीत गये, महीने बीत गये, सदियाँ बीत गई कई मेले लगे और बिखर गये लेकिन जो गहराई में उतर गये वो कहाँ लौटते हैं। वो तो खुद गहराई बन गये। वो तो सागर की अनन्त गहराइयों में गल कर खुद अनन्त बन गये फिर कहां वापस आते हैं किनारों पर!

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित लाल
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ !

सच पूछिये तो कविता भी एक छलांग है। अनंत सागर की गहराइयों में उतरने की एक साहसपूर्ण छलांग है काव्य! यह सब के बस की बात नहीं।

कवि कहलावें तो सभी

पर कवि विरला होय !

बड़ी भयानक बात है कविता का उन्माद

काश कोई समझे नहीं मेरी यह बकवाद

यदि कवि जन्मजात हुआ, माई सरस्वती का सगा पूत हुआ तो उसकी यह 'बकवाद' सीधे मन मस्तिष्क पर वार करती है। सबकुछ बदल देती है। कवि की क्रान्त-दृष्टि सत्य का, वो रूप उद्घाटित करती है, जिसको सामान्य मनुज देख नहीं पाता। तभी तो कवियों को क्रान्ति-द्रष्टा कहा गया है। 'कवयः क्रान्ति दर्शनः' कवि जिस कोण से जीवन को देखता है सामान्य जन के लिये वहां से देखना असंभव है। इसलिये कवि की बात चौंकाती है, दूसरी बात - कवि अन्तर्जगत का बिहारी है। यह बहिर्जगत में रहते हुए भी प्रबल तौर पर एकाकी है। यही अकेलापन कवि को दृष्टा बनाता है। कवि हमें तन्हा होना सिखाता है। अकेलेपन में जीने का साहस देता है। जिस पल हम अकेले हुए उस पल एक विस्फोटक़ सत्य का उद्घाटन होता है। हम अन्तर्जगत की आभाओं में विहार करने लगते हैं। दुनिया के भीतर होते हुए भी दुनिया को देख सकते हैं। दुनिया को देख पाना सबके लिये संभव नहीं। उसके लिये एक प्रखर दार्शनिक की आँख आवश्यक है। वह आँख, वह दृष्टि जिस दिन शब्द - साधन करती है उस दिन कविता का आविर्भाव होता है। ऐसे सिद्ध कवि के लिये शब्द आज्ञाकारी बनकर उसके दर्शन के वाहन बन जाते हैं। शब्द अनायास उतरने लगते हैं। आगे चलकर कविता का यह आविर्भाव प्रतिफलन में झरित होता है। दर्द या करुणा कविता के प्रतिफलन की चरम-सीमा है। यही कविता का CLIMAX है। अनुकम्पा के कैकाशों से उतरा ज्योतिर्मय निर्झर है।

कविता तो करुणा का घर है और एक दिन यों हुआ कि **मुरली जी** का मन जोगी बन बैठा। दुनिया के प्रति वैराग्य छा गया उनके मन पर और अच्छे खाते-पीते, सुखी परिवार के होते हुए भी **मुरली जी** के मन काव्य की महत्वाकांक्षा से भर उठा। वे कविता की भयावह डगर पर चलने लगे या कहिये कि चल पड़े। राह आसान नहीं थी। ये महोदय कविता-कुमारी का हाथ थामे अनन्त की यात्रा

को निकल पड़े। अपनी मातृभाषा सिन्धी में फिर हिन्दी में काव्य के पड़ाव बनाने लगे। इन पड़ावों से गुज़रते हुए इन्होंने समाज के, प्रकृति के क्या-क्या नज़ारे देखे ये तो इनकी कविताएं बताएंगी। हम तो यह कहेंगे कि काव्य अन्तिम सुख है, LAST-LUXURY है। कौन कहाँ पर रुक जाता है यह अलग बात है, लेकिन काव्य वो आन्नद है जिसको संस्कृत की एक परिभाषा में "ब्रह्मानंदो सहोदरो काव्यम्" कहा गया है। यानी जो आन्नद ऋषियों-मुनियों की ब्रह्मोपलब्धि के उपरांत प्राप्त होता है काव्य उस आनंद का सगा भाई-सहोदर है। **मुरलीजी** उस काव्य की कौन-सी मंज़िल पर खड़े हैं वे अवश्य जानते होंगे। उन्होंने कई बहुमूल्य अवलोकन किये होंगे, जो इनकी काव्य-सृष्टि में अत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं।

मुरलीजी सिन्धी-भाषी होते हुए भी, राष्ट्र-भाषा हिन्दी में काव्य-गान करने का साहस रखते हैं यह बताता है काव्य इन्सान की मादरे-ज़ुबान है जिसमें बोलना उसकी मजबूरी है। हर संवेदनशील हृदय इस भाषा में तुतलाता है। यह अलग बात है कि उसके आनंद को अभिव्यक्ति कितनी हो पाई, लेकिन यह तुतलाना बड़ा अर्थ-गर्भित सत्य है। इसी सत्य जगत के अथक पथिक हैं **मुरलीजी**। मैं उनकी सुभग, सजग, सुरम्य यात्रा की कामनाएं भेजते हुए यह शेर इनको समर्पित करता हूं :

शब्दों की खिड़की भी खुलती है अनंत में
लेकिन ख़ामोशी की वुसअ़त बात अलग है

-लक्ष्मण

जूनागढ़

'काव्यम' गांधारी गली
काज़ीवाड़ा, जूनागढ़ (गुजरात)
मो. 09323735932

कवि की कलम से :

बचपन से ही कलम व कविता से मित्रता कर चुका हूं, उसकी लेखनी में रम चुका हूं। कविता करना मेरे लिए एक विचारों की प्रक्रिया नहीं है, मैने कभी भी, कोई भी रचना सोचकर नहीं लिखी, जब भी मन करता है, कलम लेकर शब्दों का जाल बुन लेता हूं। मैं, कविता क्यों लिखता हूं इसका उत्तर मेरे पास नहीं है, हृदय में स्पंदन होता है तो अपने मित्र कलम की सहायता लेकर मन के उद्‌गार क़ागज़ पर उतार लेता हूं। इससे मुझे आन्तरिक आन्नद मिलता है। कविता सृजन करना, मेरे मन की आवाज़ है, सामान्य जन से पृथक। अधिकतर कवि समय काल व विचारों को ध्यान में रखकर लिखते हैं, पर मैं आन्नद की अभिव्यक्ति के लिए। कविता मेरे मन के भावों को व्यक्त करने का माध्यम है, चाहे वह गीतमय हो, ग़ज़ल हो यां उनमें मनुहार श्रृंगार, वियोग अथवा प्रकृति का वर्णन हो। मेरे मतानुसार कविता कवि का वह सृजनात्मक सूत्र है जो अपने दिल की भावनाओं को पढ़ने और सुनने वालों के दिल से जोड़ सके, वह एक ऐसा माध्यम है जो दूसरों के मन के भावों को मचला दे। शब्दों को बीज समझकर जब बोया जाये और उस पौधे में से जब कविता रूपी फूल की उत्पति होती हो तो उसकी सुगन्ध ही तन मन में समाकर बोझिल मन व पीड़ाओं का ताप मिटाने की क्षमता रखती है।

मैने शब्दों से बुने अपने भावों को आपके समुख इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है, - गीत, ग़ज़ल व मुक्तक के रूप में। मैं अपने पाठकों पर छोड़ता हूं कि मेरी कविता की गुणवता को ध्यान में रखकर मूल्यांकन करें व अपनी उचित राय से मुझे अवगत करें कि मेरी कविता कहां तक सक्षम है अपनी भाषा व भावों के द्वारा आपके मन में कशिश पैदा करने के लिए क्यों कि किसी भी रचना के मूल्यांकन का मापदंड होते हैं उस रचना को पढ़ने वाले, समझने वाले।

-मुरली गोविन्दानी

क्रम भाग - एक......

गी त

“सांस का इतिहास”

क्या बताऊं सांस का इतिहास मैं,
टूट सकती जो कभी भी डोर है वह ।

हर उमड़ती सांस प्रणय की निशानी है,
हर उभरती सांस जागरण की निशानी है
रूप मत दो सांस को उच्छवास का,
हर उखड़ती सांस आमरण की निशानी है ।

सांस की आवाज़ को मत गर्त करो
सागर सी शांत लोल हिलोर है वह ।

क्या भरोसा झोंपड़ी की जीर्ण छत का
आंधियों से टूट कर गिरती कभी भी,
क्या भरोसा आदमी की तृष्णा का
झिलमिलाती ज्योति बुझ सकता कभी भी ।

भावनाओं के भरोसे मत रहो तुम,
हर चिता की सेज का जो छोर है वह ।

सांस की हर डोर पर काल का पहरा खड़ा,
सांस के हर छोर पर जीने का प्रश्न जड़ा,
तोड़ न देना सांस के हर जोड़ को तुम
सांस के हर जोड़ पर जीवन का चित्र मड़ा ।

कम न समझो सांस के इतिहास को,
जीवन मरण के मोड़ का जो ठोर है वह ।

"सीख"

दिखलाता चल नवजीवन सबको,
स्नेह भाव सिखलाता चल।

रिस रिस कर दीपक अपनी
लौ से प्रकाश लुटाता है,
तन जलाकर, मन लगाकर
जग का तिमिर मिटाता है,

दीपक समान
छोड़ अभिमान -
अपने स्नेह हास से सरिता सा लहराता चल
सिखलाता चल दिखलाता चल।

वंशी की मधुर तान सुन
सांप विष उगल देता है,
स्नेह के मधुर राग से
क्रोध शांत हो जाता है।

बैर भगा
स्नेह जगा -
जग के अश्रुकण को मधुकण बनाता चल
सिखलाता चल, दिखलाता चल।

"संचय"

तुम जानो सिर्फ स्वप्न संजोना,
मैं प्यार संचय करने आया हूं ।

मैं तो लोभी कोमल कलियों का
पराग लूटना ही चाह मेरी,
गीतों के सभी मृदु शब्दों से
अनुराग पाना ही चाह मेरी
पर सदैव की भांति आगे मेरे
शूल बन तुम आया न करो -
क्योंकि जग की अनेकता से,
एकता मिलाना ही राह मेरी ।

तुम अज्ञात आर्कषण के लोभी,
मैं श्रृंगार संचय करने आया हूं ।

क्षण क्षण के मिले दुखों से मैं
सुखों की अनुभूति करता हूं,
सावन के बहते अश्रुओं से
सिंचन की स्मृति करता हूं,
पर तुम साथी न बन सके मेरे,
व्यर्थ गीत क्यों लिखते हो,
यदि गीत बुनू यादों के भी,
तो भाव स्नेह के भरता हूं ।

तुम आवारा से फिरते जग में,
मैं संसार संचय करने आया हूं ।

तुम जग के प्रत्येक कण में
विराग देखते हो प्यार का,
मै प्यार की हर वेदना में
राग देखता हूं बहार का,
तुम वैभव के प्रासादों में
लोलुप इच्छाओं के शिकार बने,
छोटा सा इक दीपक हूं,
किसी घर के अंधकार का ।

तुम तो हो पतझड़ के फूल
मैं बहार संचय करने आया हूं ।

"निमंत्रण"

आज किसी के आमंत्रण पर
अनायास अन्तर है आतुर,
पौर पौर फैली अरुणाई -
जब नयनों का मिला निमंत्रण ।

अधरों पर बहका सावन है,
रग रग में सपन घुले है,
सांस सांस में सुगन्ध बसी,
और आंगन आंगन फूल खिले हैं ।
फिर स्वप्न साकार हो उठे,
जब नयनों का मिला निमंत्रण ।

नेह भरी भीनी सी बरखा
मंद मंद बतियाती फिरती,
महक रही अन्तर की कलियां
अंग अंग में झूमे मस्ती ।
मुक्त गगन में झूम रहा मन,
जब नयनों का मिला निमंत्रण ।

आज मौसम के आलंगिन से
मन का कोना भीग गया है,
लाज की परतें गालों पर है
नींद नयन से छीन गया है ।
आखों में नव जीवन स्वागत
जब नयनों का मिला निमंत्रण ।

"आकुल अन्तर"

पलक आंकती सी प्रतीक्षा
अभी कितने दिन और ?

कितने दिन यह दिल तरसेगा
और बरसेंगे नयन,
सांस सांस में उन्मुक्त पवन
कब भर देगी सिरहन,
सांसो के व्यापार की आशा,
अभी कितने दिन और ?

कितनी आस लगाऊं दिन दिन
दर्द बसाऊं दिल में,
व्यथा से लोचन भर आए
और छला पल पल ने,
व्यथा की अतरंग निराशा,
अभी कितने दिन और ?

बीत रही ऋतु सावन की,
रीती मन की गागर,
उभर चुकी जो आकुल आशा,
पीर मिटाओ आकार,
प्रणय निनेदन की अभिलाषा
अभी कितने दिन और ?

"मिलन-चरण"

आज मिलन का प्रथम चरण है ।

सुख सपनों से ले लिया है,
दुःख आँसूओं को दे दिया है,
मधुर मधुर जीवन का आंचल
भरकर मोद में उड़ रहा है ।
अब झूम रही मलयज पवन है,
आज मिलन का प्रथम चरण है ।

आज अधरों पर गीत नया है,
गीतों का उल्हास नया है,
मेरे अस्फुट भाव भरे शब्दों के
उच्छवासों ने ये कह दिया है ।
चुमकारता यह नव गगन है,
आज मिलन का प्रथम चरण है ।

आज प्रणय की नव बेला पर,
कर से दोनो कर मिलाकर,
आरतियां उतार उतार फिर
मिल रहे सब सांध्य स्वर ।
आज पुष्पों का अभिनंदन है,
आज मिलन का प्रथम चरण है ।

"गीले गीत"

गीले हैं मेरे गीत,
सींची जाए सूखे अश्कों से मेरी प्रीत,
गीले हैं मेरे गीत ।

जीवन बना गम्भीर,
मैं स्वयं बना अधीर,
आकर ठंडी समीर -
छेड़े दर्द भरा संगीत,
गीले हैं मेरे गीत ।

उभर चुकी है व्यथा,
कह न सकू मैं गाथा
रोना भी नहीं आता -
कैसी ये जग की रीत,
गीले हैं मेरे गीत ।

खामोश चोट हृदय सहे,
व्यथा मन की नैन गहे,
अपलक गालों से बहे -
बन अंजान सी कवित
गीले हैं मेरे गीत ।

"दर्द की सिहरन"

रात ढल गई अभी कि प्यास अनबुझी रह गई है।
दर्द की सिहरन आंसुओं की पीड़ा सह गई है।

कब तब उलझते रहेंगे डगमगाते पांव मेरे,
चांदनी भी नयनों को
उलझाया करेगी कब तलक,
ज्ञान के विश्वास में मुश्किल है रिश्ते निभाना,
पाल ज़िंदगी का ऐसे
झुकता रहेगा कब तलक।
डगमगाती भावनाओं की निष्ठाएं थक गई है,
दर्द की सिहरन आंसुओं की पीड़ा सह गई है।

थक गया मन, उलझ गया तन, चांद बरसाए अगिन,
क्लांत मन से उठा ज्वार,
सांस भी बन गई घुटन,
गीतों के मधुबन में साध बधांना है मुश्किल,
पीर को स्वीकार करना
है मिटाना सब स्वप्न।

देहरी पर संदली पवन आते आते रुक गई है
दर्द की सिहरन आंसुओं की पीड़ा सह गई है।

"और फिर पास आओ"

पास आओ,
छोड़ो भी,
रहने दो,
कांपते अंधरों से कुछु कहने दो ।

प्यार का अनाम अक्षर,
खींच दो तुम
आज अधरों से अधर पर
मुस्कराकर.....
और थोड़ी,
मंद मंद,
यौवन गंध,
धीरे धीरे सांस सांस में धुलने दो,
कांपते अधरों से कुछु कहने दो ।

दूर की यह प्यास क्योंकर
छेड़ दो तुम,
आज कोई गीत मन के,
पास आकर....
और अब तो,
प्राण मेरे,
दूधिया सी,
आज निश की चांदनी भी खिलने दो,
कांपते अधरों से कुछ कहने दो ।

“गीत की गति”

जब साधी गई न मुझसे मेरी प्रणय बेला,
हर निहारती आंख की
निगाह मुझसे रूठ गई ।

मन मेरा तो चंचल सरिता की भांति,
न रख सका विश्वास उनकी निगाहों पर,
करता रहा सदैव अपनी ही मनमानी
न ठहर सका कभी किसीकी आहों पर।

जब न बांध सका अपने ही विचारों को
ख्यालों की गति शून्य मे आकर टूट गई ।
हर निहारती आंख की
निगाह मुझसे रूठ गई ।

कौन बताए भूल कौन आए सुधारने
समझ कर मेरी पीड़ा कौन लगे दुलारने,
किसकी मन में आस किसकी चाह धरूं,
किसके मन मंदिर पर अब विश्वास करूं ?

जब सह न सका अपनी ही पीड़ाओं को
तो आंसुओं की रेखा नयनों में आके छूट गई ।
हर निहारती आंख की,
निगाह मुझसे रूठ गई ।

"प्रतीक्षा"

चेत आया, लौट गया,
लौटे सावन हर बार,
पर तुम न आए ।

भ्रमर आए रस चूस कर,
रिवज़ा आई बहार छोड़कर,
फूल कली सब मुरझा गए
मुरझाया मन, दर्द ओढ़कर ।

कली कली और कुंज लौटे,
लौटे सावन हर बार,
पर तुम न आए ।

विश्रुब्ध नयन अश्रु बहाए,
विगत दिनों की याद दिलाए
दिन ढले फिर रात आई,
बीती बातें फिर दुहराए ।

आकर मोरे घर अंगना से
लौटे सावन हर बार,
पर तुम न आए ।

“ओ पिया”

ओ पिया.....

सांसो की देहरी पर खड़ी
लुटाती अनबींधे मोती
तेरे लिए, ओ पिया ।

लदे फूलों की डालियां झुक जाएंगी,
बसंती पवन प्राण मेरे छक जाएंगी ।
नज़र में टांकू चांद सितारे,
तेरे लिए, ओ पिया ।

ओ पिया, व्यथा भरी मन की सुलगती आग,
खींच लेगी तेरे चरण मेरा अनुराग
लिए खड़ी रही जलता चिराग
तेरे लिए, ओ पिया ।

यह घुटा घुटा क्षण बंदी न बन सकेगा
यह लुटा लुटा प्यार आंधी न बन सकेगा,
यह बजती शहनाई की धुन
तेरे लिए, ओ पिया ।

"प्रतीक्षा के दीप"

अब तो न तड़पाओ साजन,
बहार लौट गई आकर आंगन
व्यथा मन की उभर चुकी है
आकर मन के घाव सहलाओ ।

मुझे न चाह परवाज़ की है
मेरे सब पंख कट चुके हैं,
पेड़ों की हर डाल डाल के
फूल पते सब मुरझा चुके हैं ।

मेरे अधरों की लाली भी
तुम बिन आज मिट चुकी है,
तड़प रही मैं आज विरह में,
बीती बातें तो दुहराओ
आकर मन के घाव सहलाओ ।

मेरे नयनो के कम्पन भी
दूर राह पर आस लगाए,
मेरे मन की धड़कन में
प्रतीक्षा के दीप जलाए ।

हर राह पर नयन बिछाए
नयन ज्योति लुट चुकी है
अब न और तड़पाओ निर्मोही
मेरे जी को तो बहलाओ
आकर मन के घाव सहलाओ ।

"धूम मची"

राधा की मान भरी
फिर बंशी लहराई है
आंगन से गली गली
धूम मची आई है।

सत्य की शाखें झुकी
पवन के अनुबंध से,
पूनम की छांव रुकी
एक परिचित गंध से....

अधरों की पात पर
रस की फुहार घोल,
सपनों का द्वार खोल
कल्पना मुस्कराई है।

सिसकियां ले डूब गई,
खालीपन अम्बार का,
झूम उठा मौजों से
अपनापन अंदर का......

कोयल के गान पर
मधु ध्वनि बिखेरकर,
होठों का कम्पन उभरा
आंखों की गहराई है।

"रूप का अहसास"

रूप का अहसास ही काफी है
दर्दे दिल के लिए -
प्यार भरा मधुमास ही काफी हैं
कुछ पल के लिए ।

श्वेत चांदनी हो, और सेज सजी हो,
सब्ज़ फूलों की नरम चादर बिछी हो,
रात भर शबनम की बरसात हुई हो ।

कलियों का सहवास ही काफी है,
भ्रमर दल के लिए ।

हो मंत्रमुग्ध सपनो का सुनहरा संसार,
और चांदनी में नहाकर रस भग श्रृंगार,
जे मन को शीतल करे स्नेहमय इज़हार -

रिश्तों में विश्वास ही काफी हैं
स्नेह जल के लिए ।

"बस एक बार"

चाहे मुझे तुम किसी भी नाम से पुकार लो
चांद कहो यां चांदनी
राग कहो यां रागनी
बस एक बार सिर्फ अपने हृदय में उतार लो ।

जादू टोने मोह मंत्र की आग लगी है
इन्द्र धनुष के सात रंगों से मांग सजी है
महकी महकी गंध तेरे नवयौवन की
अनायास ही अपनेपन की चाह जगी है ।

प्रतीक्षा की कठिन तपन से अब मुझे उबार लो
बस एक बार सिर्फ अपने हृदय में उतार लो ।

पोर पोर में बस चुका अहसास तुम्हारा
मन कोने में सज गया आवास तुम्हारा
मन की अकुलाहट और तन की आतुरता
मिलन क्षणों में रच देगी इतिहास हमारा ।

अपने एकाकी मन को प्यार से संवार लो,
बस एक बार सिर्फ अपने हृदय में उतार लो ।

"रूप का अभिमान"

मत करना रुप का अभिमान प्रिय,
तुम्हे मेरी कसम है, मेरी कसम ।

हंसते इन फूलों में जग की कोमलता भरी,
नाजुक पंखड़ियों में मन की मृदुलता भरी,
अधरों से झड़ते फूल कोमल,
फूलों को मत दुतकारना प्रिय,
तुम्हे मेरी कसम है, मेरी कसम ।

स्वपन्नमयी नयन, अंमुंदी जी पलकें,
सुधा सा बदन, बिखरी हुई अलकें,
रूप में चांदनी सा लावण्य
चांदनी को मत शर्माना प्रिय,
तुम्हे मेरी कसम है - मेरी कसम ।

अभिमान मूल अमानवता का गड़ है
सुंदरता सब मृदुलता की जड़ है,
नयनों में प्यार की अंगड़ाई लेकर,
मानवता ही स्वीकारना प्रिय,
तुम्हे मेरी कसम हैमेरी कसम ।

“नेह का अधिकार’

क्या हुआ, क्यों आज मेरे
नयन मादक हो उठे -
शायद,
किसी की चाह ने
स्वीकार किया है मुझको ।।

पहले तो कुछ बात न थी,
अब बात बात पर शर्मा जाना,
ऐसी कोई रात न थी,
अब रात रात भर नींद न आना ।
शायद,
किसी के प्यार का,
उपहार मिला है मुझको ।।

आज किसी के नेह पाश में,
उलझी है नयनों की चितवन,
लाज की परतें गालों पर है
महका महका मन का उपवन ।

शायद
किसी के नेह का,
अधिकार मिला है मुझको ।।

"नाम दे दो"

तुम मुझे कोई नाम दे दो
प्यार का वरदान दे दो,
नेह पाश में छबि तुम्हारी,
जीने का आयाम दे दो ।

हृदय मंदिर में जगह बहुत है,
अरमानो के सिलसिले हैं,
मदिर मदिर सपनो की भाषा
कोमल जिसमें फूल खिले हैं ।
अभी नयनो में लाज बंद है
सपनो को सनमान दे दो ।

जब जब मादक नयन झुकाकर
धीरे से तुम मुस्कराती हो,
तब तब तुम पर छा जाने को
तन करता है मन करता हैं ।
मेरी गीतों की गुञ्जन को
स्वरोंकी पहचान दे दो ।

सांस सांस का मधुर मिलन औ,
प्यार भरी मनुहार की बातें
रोम रोम हो उठा सुगंधमय
पाकर नव श्रृंगार की रातें ।
बाहे स्नेहधारा प्रतीमय,
प्रीत का परिणाम दे दो ।

“यादें”

तुम पंथी बन गीतों से निकल गए
तो क्या हुआ
पर यादें तो तुम्हारी साथ चलेगी ?
राही थे तुर्म पनघट के
पर जाना था मुझको दूर,
साथ तुम्हारा छूट गया,
तो थक कर हो गया चूर ।

साथ देने का वादा करके,
राह में तुम छोड चले,
मेरे सजाए सपनो को
ठेस लगाकर तोड़ चले ।

तेरी याद में नयन भर आएंगे
तो क्या हुआ
पर धड़कन तो तुम्हारे साथ चलेगी ।
टूट गए सब साज़ मेरे
मन पंछी भी मौन रहा
मन की आकुलताओं का
साथी आकर कौन रहा

गीत अब में गा न सकूंगा
दिल अपना बहला न सकूंगा,
खोलकर निज नयन अपने
नीर तक, बहा न सकूंगा ।

तुम सांस बन सांस से निकल गए
तो क्या हुआ
पर आत्मा तो तुम्हारे साथ चलेगी ।

"मन का संताप"

मन मे मेरे पल रहा संताप - प्रियतम
तुम्हे याद करूं दिन रात - प्रियतम ।

आज मेरी पीड़ा सुन व्योम अश्रु बहाता है,
पिघल कर सूर्य किरण मुझे दिलासा देती है,
तारे चुपचाप मेरे गीतों का सिंचन करते हैं -
पर चांदनी सोये दर्द को फिर जगा देती है ।
दे न सका चांदनी को मात - प्रियतम
तुम्हे याद करूं दिन रात - प्रियतम ।

दिन होके अुच्छवास मोती पीड़ा के ले आया,
और खोज रहा शून्य में आशाओं की दिशाएं,
मन में स्वप्न उभरे हृदय फिर हो गया नीरस
जो गीत भी न बन पाई मेरे मन की भाषाएं ।
एसी यादों की लिए बारात - प्रियतम
तुम्हे याद करूं दिन रात - प्रियतम ।

संजोए आया कितने वर्षो से अपने विश्वासों को
दिलासा देता रहा मिलन की सदा श्वासों को
पर अचानक पीर प्राणों में उठने लगी है
जो कर नहीं सकती शांत अपने उच्छवासों को ।
इस कदर बड़ चुकी है बात - प्रियतम
तुम्हे याद करूं दिन - रात - प्रियतम ।

"ओ निर्मोही"

सुध लेना मेरी ओ परदेसी
मेरे मन के तार पुकारे,
प्रीत निमंत्रण पाने को अखियां
सूने पथ पर राह निहारे ।

ओ निर्मोही भूल न जाना,
भूले बिसरे गीत हमारे,
याद बसी है मन में तेरी
अखियां मेरी राह निहारे ।
होगी जब जब याद तुम्हारी
रो देंगे सब गीत कुंवारे ।

मन को मन से राह हुई है,
दिल को दिल से चाह हुई है,
ओ परदेसी छोड़ न जाना,
कल्पित आशाओं के सहारे ।
रो देगी दो अखियां मेरी,
ओ निर्मोही सांझ सकारे ।

ओ मेरे मन दीप शिखा,
तेरा मेरा साथ लिखा,
तेरे मेरे प्रणय मिलन के
साक्षी हैं ये चांद सितारे ।
छोड़ न देना बीच भंवर मे
कश्ती का कर रुख किनारे ।

"कौन लेगा"

कौन मेरी प्रीत लेगा?
        मेरे मन की धारणाओं के,
कौन मेरे गीत लेगा?

आज मेरे अधर गीत गाने को लालायित है
पर लाज की रक्तिम परत छा जाती है गालों पर,
मिटने को तो मिट न पाती मेरे मन की इच्छाएं,
कौन मेरा बनेगा, उलझा इन्हीं सवालों पर ।

कौन मुझको जीत लेगा?
        मेरी निशब्द मान्यताओं को,
कौन मेरे गीत लेगा ?
कौन मेरी प्रीत लेगा ?

आज मैं चुप हूं तो इसका मतलब यह नहीं,
कि सुनता रहूं सबकी दर्द भरी कहानियां,
अपनी पीड़ा के हार को दामन में लपेटकर,
कब तक सींचता रहूं आसूं भरी कियारियां ।

कौन मेरा मीत होगा ?
  जो समझे मेरी आकांक्षाओं को,
कौन मेरे गीत लेगा ?
कौन मेरी प्रीत लेगा ?

"मुझे मत दो"

मत जकड़ो बंधनों की रीति,
मुझे मत दो मारक स्मृति।

असीम प्रणय मुझे मत दो,
अमिट चित्र मत अंकित करो,
लिपटे जग के वैभव से,
मेरे मन को रिक्त करो ।
मुझे न दो वैभव निवृति,
मुझे मत दो मारक स्मृति।

विस्तृत मन के कोनो से,
स्नेह रस लहरें अनन्त सी,
जागृत करो मुझमें क्षण क्षण,
मधुमय रस मधु वंदन सी ।
भूल जाने दो मेरा अतीत,
मुझे मत दो मारक स्मृति।

भर दे मुझमें स्नेह अमिट,
क्षीण मन को पुलकित कर दो,
छू कर मेरे अन्तार को,
मुझमें नव रस कण भर दो ।
दिखा मुझे फिर नव संसृति,
मुझे मत दो मारक स्मृति ।

“मेरे लिए कोई”

अपनी ही मिट्टी का बैरी उसको दे संताप रहा,
जैसे मेरे लिए स्वयं ही पी कोई अभिशाप रहा।

मूल रूप से नींव डाली मैने संघर्षों की वेदी पर,
प्रवृति रहा सदैव, लघुता से पुरस्कृत होने को,
पर सदैव की भांति विस्तार ने प्रभुता पाकर,
कर दी चूर प्रेरणा और मुझे तिरस्कृत होने को।
पर फिर भी अविराम गति से कोई प्रेरणा ताप रहा,
जैसे मेरे लिए स्वयं ही पी कोई अभिशाप रहा ।

वक्त की अविराम गति भी उत्सुक हो कंपित,
नींव हिला देती है उल्हास के अंतिम चरण की,
रचना के समय कभी सत्य उगाढ़ देती है ज़िंदगी,
अपने में दबी सदियों की भावनाएं मरण की ।
मेरी गति के भावों का यूं राग कोई आलाप रहा,
जैसे मेरे लिए स्वयं ही पी कोई अभिशाप रहा ।

क्षुब्धा मेरी शांत न होगी वीभत्स्व के झंकारों से,
चाहे भार भले ही आए मेरे निश्चल पावों में,
निश्चय है नहीं डिग पाएंगे आगे बड़ते कदम मेरे,
चाहे बैरी दे स्वयं ही अभिशाप अपनी आहों में।
मेरे मूल अभिशाप का मूल्य जो भी आंक रहा,
जैसे मेरे लिए स्वयं ही पी कोई अभिशाप रहा ।

"मैं न रुकूंगा"

चाहे आंगन मेरे तुम भर दो मधुर सी गुन गुन,
लाख रोको, मगर मैं न रुकूंगा ।

क्या मुझे तुम क्षण भर में बांध लोगे, साध लोग,
या मेरी अनन्त आराधनाओं का उन्माद लोगे?
पर तुम्हारी चाह का मैं न बांधूगा बंधन,
चाहे मेरी पुलकित पलकों पे आएं अक्षुकण,
आज विश्व इतिहास में, मैं परिवर्तन लाऊंगा,
लाख रोको मगर मैं न रुकूंगा ।

मैं न बिका था मैं न बिका हूं, मैं न बिकूंगा,
अपने आदर्शों से मैं न गिरा हूं, मैं न गिरूगां,
बांध ले भले मुझे विश्व महानता की गति,
स्नेह युक्त हृदय से न विश्वासघात करूंगा।
और फिर विश्वास के पथ से मैं न हटूंगा,
लाख रोको मगर मैं न रुकूंगा ।

रूठ गई मेरे मन कि दीपशिखा तो क्या हुआ,
मैं स्नेह भरे दीपक से पथ दिखलाता जाऊंगा ।
वेग से आकर पवन गर रोकेगी राह मेरी,
दिखला दूंगा उसे, मुझे नहीं परवाह तेरी।
अपनी मंजिल तृष्णा के भार से मैं न डिगूंगा,
लाख रोको मगर मैं न रुकूंगा ।

“वज्र के कण”

अहो देव !
कितने दुख हैं
मेरे जीवन में ।

वज्र का एक छोटा सा कण,
क्षण में भर देता है -
आंसुओं की अंजुली,
मेरे मन में,
अहो देव कितने दुख हैं,
मेरे जीवन में ।

पीड़ाएं मन की लकीरों को,
झकझोर जाती हैं-
करुणा का पथ बंधा
मेरे दामन में,
अहो देव कितने दुख हैं,
मेरे जीवन में ।

गहन विपतियों का सागर ले,
जग की व्यथाएं भर दी ।
चुन चुन कर मैने,
अपने आंगन में ।
अहो देव कितने दुख हैं,
मेरे जीवन में ।

“स्नेह दीप”

ना जीवन की तंग राहों से,
मैने हटना सीखा है,
ना फिर कभी कठोर काम से,
जी चुराना सीखा है।

बग़ावत का है जोश मुझमें,
हृदय वीर रस से भरा,
मन मेरा है मोम जैसा,
भाव ममता सा भरा ।

मानवता का वरदान हूं मैं,
सदगुणों का अम्बार मुझमें,
पतितों का अरमान हूं मैं,
निर्धनों का आधार मुझ में ।

कोमलता में पला हूं मैं,
मृदुलता मेरा उपहार,
सभ्यता है शान मेरी,
मधुरता जीवन भंडार ।

मेरी तो बस एक चाह है,
विश्व भर में सुख शांती हो,
जात पात पर हो न विभाजन,
मुख मंडल पर क्रांती हो ।

"पा प्रतीक्षा"

इतना दर्द क्या कम था - सहने को,
जो और दे रही हो ।
पर फिर भी स्वीकार कर- सह लेता हूं,
तिल तिल कर,
जल जल कर,
पल पल भर ।
जलता हूं - शायद इसलिए,
किसीको आता है जलने में मज़ा-
परवाने सा ।
किसी को जलाने में - शमा सा,
तुम शायद शमा बनना चाहती हो,
मुझे परवाना बनाने के लिए,
कि तुम जलाती रहो- मैं जलता रहूं,
पर शायद भूल रही हो कि,
परवाना तो जलके ख़ाक हो जाता है,
पर मैं जलके भी तड़फ रहा हूं,
शायद ख़ाक होने के इन्तज़ार में,
पर मरना भी मेरे नसीब में नहीं,
इसलिए जल रहा हूं-सिगरेट सा,
सिर्फ भीतर से धुंआ निकल रहा है,
शायद इन्तज़ार की आग में,
प्रतीक्षा की घड़ियां-
और भी लम्बी-लगने लगती है,
और दृष्टित होता है
एक सीमाहीन अंबर,
तन्हाई - दर्द और
द्रवित नयन ।

“वसंत गीत”

जाग जाग वसंत फिर जाग ।

अनिल ले आया मधुर क्षण,
लुटा रहा कुंदन कण कण,
तोड़ कर चिर निद्रा अपनी,
दे दो सबको आमंत्रण ।
छेड़ बगिया में मस्त राग,
जाग जाग वसंत फिर जाग ।

लो खुल गई किसलय अंचल,
यौवन कलियों पर रहा मचल,
सारे उपवन में महक बिखरी,
तो फूल फूल बन गया चंचल।
तू भी लिए नव अनुराग,
जाग जाग वसंत फिर जाग।

प्रातः हुआ हंस पड़ी उषा,
खुल गई फिर दिशा दिशा,
अम्बर अवनी पर छाई मस्ती,
बदली जीवन की परिभाषा।

छोड़ अब तो आप विराग,
जाग जाग वसंत फिर जाग ।

“सतरंगी सोना”

सतरंगी सोने से,
पात पात का चेतना।

इस और से उस और,
धरती के कानन में,
अम्बर के आनन में,
लतिकाओं के उस छोर...
कुसमों का खिलना,
पात पात का चेतना ।

प्रभात की किरन से,
कल्पनाओं में डूबा,
बने जाल अनबुझा,
मीठे झोंके पवन से...
लहरों का मचलना,
पात पात का चेतना ।

सुबह की प्रथम किरन,
तोड़ चुकी आलस्य,
खिल चुका किसलय,
महक फैली चमन चमन...
बंद नयन का खुलना,
पात पात का चेतना ।

"प्रातः गीत"

वसंत ऋतु के सीत्कारों से,
वातावरण हो उठा सुशोभित।

पात पात से ध्वनित होकर,
शाख शाख से हो झंकृत,
मंद पवन के झकझोरों से,
फूल फूल हो उठा मुखरित।
वातावरण हो उठा सुशोभित।

रजत औस की शबनमी बूंदे,
रात करती उषा को अर्पित,
द्रवित हो कनक किरन से,
बह उठा रसयुक्त अमृत,
वातावरण हो उठा सुशोभित।

सरिता की धीमी सी कल कल,
मन को कर देती है चंचल,
मधुर राग की ध्वनित ताल पर,
स्नेह भाव हो उठे जागृत,
वातावरण हो उठा सुशोभित ।

“स्वर्ण-कण’

लुटा रहा अरुण,
स्वर्ण कण-स्वर्ण कण ।

उषा ने फेंका अपना बाण,
रक्तिम हुआ सारा गगन,
चर अचर सब मानव प्राणी,
उसके आगमन से मगन ।
जागरण गीत सुनाने आती,
स्वर्ण कण - स्वर्ण कण ।

शबनम है रस छलकाती,
कलियों पर छाया यौवन,
पुष्प भ्रमर के आलिगंन से,
महकता है उपवन उपवन ।
बादलों से चुपचाप निकली,
स्वर्ण कण - स्वर्ण कण ।

अभी तो दिनकर जागा है,
कहां सारा सोना पिघला है,
सागर जल है रक्तिम रक्तिम,
दूर गगन तक निकला है।
सुनहरा रंग लुटाने आती,
स्वर्ण कण - स्वर्ण कण ।

"वर्षा का आगमन"

धुंधले पड़ गए वन उपवन,
बादल लाए मलयज पवन,
नव ऋतु की नवीन चेतना,
बरसा रहा है नील गगन ।

उमड़ उमड़ कर आते बादल,
बूंद बूंद बरसाते बादल,
मन में नव उत्साह जगाकर,
शायद कुछ कह जाते बादल ।

चंचल चपला नृत्य नचाती,
बूंदे गिर गिर रास रचाती,
काले कपसीले मेघों से,
वर्षा रूपी बाण चलाती ।

ऊपर जाल घटाओं का - कपसीला है रंग,
ठम्डा भाल हवाओं का - मधुर झूमे अंग ।

रह रह के कौंधे बिजली - आस्मान के कोने से,
झूम रहा हैं इन्द्रधनुष - सतरंगी सोने से ।

न जाने कहां खो गया वह रश्मियों का साथ,
लगता है आज होगा यहां वर्षा का नव नाच ।

"ऋतुएं"

"**वसंत**" ले आया नव कलियों का उपहार,
चारो और गंध फूलों की, चमन है गुलज़ार,
महक उठी हर डाली डाली, महक उठा संगीत,
'वसंत आया' 'वसंत आया' गूंज उठा यह गीत ।

"**गर्मी**" आई लिए साथ अपने सूर्य की तपन,
लगे दहन दिन में और रात में गर्मी सघन,
पसीना ज्यों ज्यों, टप टप टपके तन से,
आग भरी ज्वाला सी तब उठती है मन से ।

"**वर्षा**" आई साथ अपने लेकर जल ही जल,
काले काले उमड़ उठे तब चारों और बादल,
चातक और कृषक की सारी चिंता है जाती,
नव जीवन की नव आशा वर्षा रानी ले आती।

"**पतझड़**" ले आया संग अपने सूख़े पल्लव,
सूख्र रही हर डाली डाली सूखे सब सल्लव,
फिर भी बागों में एक रंग अनोखा आ रहा है,
नव फूलों की आशा में भौंरा गीत गा रहा है ।

"**सर्दी**" आई लेकर साथ अपने ठन्ड ही ठन्ड,
बदल गया जीने का ढंग हर कार्य पड़ गया मन्द,
ओढ़कर गर्म वस्त्र रखें बदन को ढककर,
तो भी ठन्ड से कांपे बदन ठर ठर थर थर ।

“देश प्रेम”

ओ रण में जाने वाले सिपाही,
युद्ध में जाने से पहले,
सीमा पर आरती उतार लेना ।

भाव संग्राम का राग सुनकर,
ललकार उठना शस्त्र लेकर ।
भारत भूमि की रक्षा के लिए,
अपना सारा लहू बहा देना,
सीमा पर आरती उतार लेना ।

दिशा दिशा से पुकार उठी है,
हर और यह फूंकार उठी है ।
कि अपना बलिदान देकर भी,
नाम देश का ऊंचा उठवाना,
सीमा पर आरती उतार लेना ।

वीर अनेक जाएंगे देश हित लड़ने,
रह जाएंगे जिन के कई अधूरे सपने,
पर जो कहलाए शहीद उन पर,
दो मूक आंसू बहा देना,
सीमा पर आरती उतार लेना ।

"दे लहू यां ले लहू"

मचा यह हाहाकार कैसा?
चाह का तो नाम नहीं है,
युद्द का उल्हास छाया ॥

देश पुकारता है शूरो,
तोड़ो मोह जाल तंद्रा से,
समय पुकारता है वीरो,
जागो फिर चिर निंद्रा से ।
नवयुग के हे मौन वीर,
हे वीरराज निज खोल बन्धन,
अपनी चिर संचित शक्ति से,
तोड़ जगत असीम बन्धन ।
शांति का तो नाम नहीं है,
क्रांति का उल्हास छाया,
मचा यह हाहाकार कैसा ?

मत हो गंभीर - मत हो अधीर,
सुन राग भैरवी - कर निनाद,
धरा तो क्या नभ को हिला,
ले साथ देश को कर न विवाद,
हे वीर पुत्र - हे शक्ति पुत्र!
वायु पुत्र - हे शांति पुत्र !
ले खड़ग हाथ फिर मन में धार,
ले लहू यां दे लहू ।
फिर अहिंसा का उल्हास कैसा,
हिंसा का है हास छाया,
मया यह हाहाकार कैसा ?

"दीपावली"

ज्यों आकाश में तारों की लड़ियां,
त्यों अवनि पर रोशन फुलझड़ियां-
लगता है दीपावली आ चुकी है,
समस्त संसार में मौज मच रही है।

ऊपर नीचे गलियारों में,
झिलमिल झिलमिल दीप जले हैं,
आओ मिलकर खुशियां बांटे,
दुनिया भर के पाप धुले हैं ।
घर आंगन रंगोली रच रही है,
लगता है दीपावली आ चुकी है ।

राम राज की करें कामना,
रावण युग का करें खातमा,
सबके मन हो सुख और शांति,
क्रोध ईर्षा का करें सामना ।
घर घर में मिठाईयां बन रही है,
लगता है दीपावली आ चुकी है ।

आरती की सामग्री सजाकर,
पूजा हो श्री राम सीता की,
सब देवों का गुणगान करें,
फिर स्तुति हो लक्ष्मी माता की।
हर ग्रहणी दुल्हन सी सज रही है,
लगता है दीपावली आ चुकी है ।

"स्वाभिमान"

हर दिशा में समय का राज है,
हर और खुद अपना स्वराज है,
फिर क्यों विदेशी दान लें हम?
किस लिए देश बदनाम करें हम?

हमें परवाह नहीं किसी के दान की,
हमें तो चाह है अपने स्वाभिमान की,
अपने आप मैं खुद बलवान हैं हम,
किसि लिए देश बदनाम करें हम ?

अकालों को देवी वरदान समझकर,
क्यों सब किसी का अहसान लेकर,
विदेश नीति खराब करें हम,
किस लिए देश बदनाम करें हम?

खोखले जिस्मों में जान फूंक देंगे,
बोईमानों में ईमान फूंक देंगे,
किसी के आगे न झुकेंगे हम,
किस लिए देश बदनाम करें हम ?

हर रुप और रंग में किसान हैं हम,
अपने देश के लिए महान हैं हम,
आओ विश्व शांति का काम करें हम,
किस लिए देश बदनाम करें हम ?

"गांधीधाम बनाने वाले भाई प्रताप को श्रद्धांजलि"

तुम आए थे अपनी प्रतिभा दिखलाने "प्रताप",
पर अब तो अर्चना के फूल भी मौन पड़े हैं ।

कौन जानता था संघर्षों में पड़कर,
अचानक काल यूं आक्रमण करेगा,
किसको पता था कि समय का चक्र चलकर,
हमसे हमारे "प्रताप" का प्राण हरेगा ।
पहले तो तुम्हारी तस्वीर रहती थी हृदय में,
पर अब तो उस पर श्रद्धा के कुछ फूल जड़े हैं।

मुखमंडल ही उदास नहीं,रो उठा गगन है,
हर जीव के चेहरे की रंगत मलिन है,
कंपित स्वर पुकारता, "ओ भाई प्रताप",
आज उदास ये गलियां ये आंगन है।
तुम अपनी प्रतिभा दिखलाकर तो चले गए,
पर अंत में सब तुम्हारे दर्शन को तड़पे हैं ।

तुमने कच्छ के वीरानो में बस्ती बनाई,
सिंधियों की खोई हुई किस्मत जगाई,
हज़ारों निर्वासियों के सहयोग से,
"गांधीधाम" बनाने के लिए जान लड़ाई।
तुमने गांधीजी के नाम पर नया नगर बनाकर,
उनकी समाधी में उनकी अस्थियों के अंष जड़े हैं।

निर्वासियों के हे पूज्य अवतार,
तुमको मैं करूं प्रणाम, कहूं प्रणाम।

“पत्र परिभाषा”

जब जब भी मिलती है प्रीत की पाती,
नस नस में मीठी कसक दौड़ जाती है,
एक अजब सी सिरहन उठती है अंदर में,
मन को स्वपनिल संसार से जोड़ जाती है।

पत्र तो मन की भावनाओं की उपज है,
पाने पर होता है मिलन का अहसास,
शब्द शब्द में बसा ज्यों रूप किसीका,
एसा लगे कोई खड़ा है आसपास ।

प्रतीक्षा के पलों में पत्र अमृत सा लगे,
दर्द चुभन के समय ज्यों संजीवनी बूटी,
अंतर के घावों पर पत्र मरहम सा लगे,
जो न मिले पत्र जो समझो किस्मत फूटी।

पत्र पाने पर खिल उठते हैं मन के कुसुम,
आकुल हृदय को मिलती है मधुरमय झंकार,
पत्र प्राप्ति है मधुरतम जीवन का प्रतीक,
हर पृष्ठ से जुड़े हैं प्रफुलित मन के तार।

ग़ ज़ ल

भाग - दो......"ग़ज़ल"

नं.	नाम .	पृष्ठ संख्या

“ग़ज़ल”

बात इस कदर बढ़ेगी - सोचा न था,
तीर बन दिल में चुभेगी - सोचा न था ।

1. ज़िंदगी भर साथ जिनके साथ चले थे,
मात उनसे ही मिलेगी - सोचा न था ।

2. विश्वासों के बीच कैसी आग लगी है,
बेवजह रिश्ते टूटेंगे - सोचा न था ।

3. लाख चाहा अफवाहों से दूर रहें,
फासले बढ़ते रहेंगे - सोचा न था ।

4. मन भँवर में ऐसी भी घड़ी आई,
अपने आप पर हंसेगे - सोचा न था ।

5. ग़ज़ब ऐसा कि मन्दिर में चोरी हो गई,
स्वयं भगवान भी रोएगा - सोचा न था ।

6. सबको भाग्य का फल तो यहां ही मिलता है,
वक्त किस कदर फिरेगा - सोचा न था ।

"ग़ज़ल"

हृदय में सपने सजाकर देखिए - होता है क्या?
नयन में आंसू पिरोकर देखिए - होता है क्या?

1. आदमी की आईने के सामने पहचान क्या,
स्वयं को स्वयं में समाकर देखिए - होता है क्या ?

2. दूर की क्यों आसपास अपने जनो की सोचिए,
ग़म के मारों को हंसाकर देखिए - होता है क्या ?

3. कौन जीते कौन हारे, अपनी अपनी किस्मत है,
बस मस्ती में मय पिलाकर देखिए - होता है क्या?

4. मिलने के हर अवसर पर बेताबियां कुछ इस कदर,
तीर अपनी और चलाकर देखिए - होता है क्या ?

5. लोग आते रहे, कुछ पहचान बना जाते रहे ज्यों,
फूल में सुगन्ध बसाकर देखिए - होता है क्या ?

“ग़ज़ल”

जो होना है, हो रहा है, उसे होने दो,
चुपचाप अपने शांत मन को सोने दो ।

1. किसको पड़ी है आज किसी के सच झूठ की,
   सच झूठ की लहरों बीच नाव खोने दो ।

2. मत ढूंढते फिरो किसीके आत्मा का कल,
   अपने नयनों को आंसुओं से भिगोने दो ।

3. किसी का प्यार गर तुम्हारी आंखों में है,
   रिश्तों की बीज हृदय तल में बोने दो ।

4. खाली शब्दों से अब न भरता है दिल,
   जीने के लिए उन्हे बच्चों के खिलौने दो।

5. जो धुआं सपना बन व्याकुल करे रात भर,
   नींद के मोती उनकी माला में पिरोने दो ।

"ग़ज़ल"

दुनिया बदल चुकी है, चलो हम भी बदलके देख लें,
मौसम की तरह हर पल हर रिश्ता बदलके देख लें ।

1. आदमी और आदमियत के बीच की पहचान क्या,
संसार के बने बनाए सब नियम बदलके देख लें।

2. सत्य असत्य की तुलना तराजू में हो नहीं सकती,
झूठ क्या है आंख पर सच का चश्मा चढ़ा के देख लें ।

3. जीना तो सबको है हंसकर जीओ चाहे रो रो कर,
ज़िंदगी की कठिन राहों पर दो कदम चलकर देख लें।

4. गिरना फिर संभलना यह तो मानव मन की फितरत है,
सफल जीवन के लिए कोई लक्ष साधके देख लें ।

"ग़ज़ल"

होसला हारकर पीछे न देख, बढ़ता जा लहर की तरह,
स्वयं की पहचान बनाओ गीत गज़ल और स्वर की तरह ।

1. क़िसी के होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता,
क्योंकि हर चीज़ भुला दी जाती है खंडहर की तरह ।

2. विश्वास के दर्पण में अपना अक्स ढूंढने की कोशश करें,
वर्ना ज़िंदगी गुमनाम राह पर भटकेगी भंवडर की तरह ।

3. मन जितना सोचता है उतना कभी पा नहीं सकता,
मुकदर के आगे हर कोई लाचार है सागर की तरह ।

4. देखना है बदलते परिवेष में जीना कितना सरल है,
लक्ष तक पहुंच पाते हैं यां डूब जाते हैं भंवर की तरह ।

“ग़ज़ल”

कैसे हैं लोग जो अपनो को ही डस रहे हैं,
मौत सामने देखकर मंद मंद हंस रहे हैं ।

1. कुछ ऐसे भी हैं, अपने ही साये से डरते हैं,
और स्वयं बुने कपट जाल को ही कस रहे हैं।

2. हर दिल की सुनो यां चांद की गवाही ले लो,
प्यार के नशे में सब जान बूझकर फंस रहे हैं।

3. इस दुनिया में अब रहने की तमना नहीं रही,
मौत के साये दिलो दिमाग को ही घस रहे हैं।

4. ज़िंदगी और मौत की किसने कहानी है लिखी,
सभी के सभी अपनी मस्ती में ही रस रहे हैं ।

“ग़ज़ल”

भ्रम भरी इस दुनिया में बेसबब जीते हैं लोग,
कभी अपने कभी रिश्तों के गम पीते हैं लोग ।

1. समझोतों और अपने अहंकार के बीच न जाने,
   कितनी बार जीते कितनी बार मरते हैं लोग ।

2. अपनी पहचान बनाए रखने के लिए कभी तो,
   खुद अपनी जात से मुंहं मोड़ लेते हैं लोग ।

3. भेद भाव भरे इस माहोल में यहां तक कि,
   अपनी परछांई तक से भी डर जाते हैं लोग।

4. रोज़ वही दिनचर्या रोज वही बेकार की बातें,
   एक तरह का जीवन जीकर मर जाते हैं लोग ।

"ग़ज़ल"

क्या करूं किस किस से पूछूं अपनी हार का कारण,
बहुत कठिन है आंकना अपनों के व्यवहार का कारण ।

1. हम तो रो लिए आईने में देखी जो अपनी सूरत,
अभी तक जान न सके हैं दोस्तों की मार का कारण।

2. रोज़ नयनों में भरते हैं ताज़े गुलाब की पंखुड़ियां,
मुझसे कोई पूछता नहीं दिले बीमार का कारण ।

3. उजाले पर लिखे हैं गीत और सावन पर ग़ज़लें,
फिर भी समझ से परे है मन के अंधकार का कारण।

4. कुछ तो दूरियां एक दूसरे में होनी चाहिए,
कोई तो बात बने उन के बीच इन्तज़ार का कारण।

“ग़ज़ल”

चुपचाप शांत सा यहां हर एक शख़्स है,
दर्पण में आंक रहा अपना ही अक्स है ।

1. आशाओं की किरणें नयनों में समेटे,
हर जगह ढूंढ रहा जो जीवन का लक्ष है।

2. कुछ न मिला उस जोहरी की तिजोरी में,
वह शातिर चोर हर ताले का दक्ष है।

3. उन के आने की ख़बर सुन दिल कोने में,
सजाए रखा एक आरक्षित कक्ष है ।

4. वह कुछु भी करे जनता उसके साथ है,
वह संसद में मुखर रखता सब का पक्ष है।

5. अपनी धुन में मस्त जो जीता है ज़िंदगी,
मौत भी उनके लिए आनन्दित रक्स है ।

"ग़ज़ल"

उलझी हुई है राह, दिले बेकरार की,
बढ़ने लगी है आग, अब तो इन्तज़ार की।

1. अपनो ने बीच खींच ली है फासलों की रेख,
दिखती नहीं है कोई आस अब सुधार की ।

2. रिश्तों को ढूंढता हूं, अपने अंतःकरण में,
सुनता नहीं है बात किसी के गुहार की ।

3. रपट उनकी जांच की जिस दिन से छपी है,
घटने लगी है प्रतिष्ठा सारी सरकार की ।

4. मैं वो नहीं, जो रेत के ही घर बनाता है,
रहती है मुझमें प्रतीक्षा मौसम बहार नहीं ।

“ग़ज़ल”

जो कहा था मैने सोचकर उसका उतर तो दो,
ऐसे ही आना ठीक नहीं पहले संवर तो लो ।

1. दर्द की इस महफिल में सबको कहो सादर प्रणाम,
जो मिट चुके हैं इस आग में उनकी खबर तो हो ।

2. जीने की इच्छा हो पर मौत का समंदर हो सामने,
हंस हंस कर जो पार लगाए उनकी कदर तो लो ।

3. चिलविलाती धूप हो और हो मंज़िल मीलों दूर,
जाने को तैयार कई पर आगे डगर तो हो ।

4. दर्द क्यों और कैसे आता है, किसको क्या मालूम,
तसलियों की इस बस्ती में प्यार का बसर तो हो ।

"ग़ज़ल"

मैने कुछ नहीं चाहा फिर भी सबकी चाहत मिली,
दोस्तों के दिल में झांका तो उनकी इनायत मिली ।

1. यह दोपहरी और सफर है बहुत दूर तक का,
कोई हमसफर मिला, तो ऐसे लगा, राहत मिली।

2. स्वयं पर विश्वास न हो तो कोई आंचल थाम लो,
फिर न कहना दोस्ती के बदले में कयामत मिली ।

3. किसी की एक ही नज़र काफी है दर्दे दिल के लिए,
अधरों पर मुस्कान भरी तो सब से वफायत मिली ।

4. कुछु लोग अपने लिए जीते हैं, कुछु दुनिया के लिए,
कुछु ऐसे भी हैं जिनके जीने को बग़ावत मिली ।

“ग़ज़ल”

क्यों बार बार आज रूठने मनाने को मन करता है,
पास बैठे बिठाए मन-प्यास बुझाने को मन करता है।

1. दिल की एक एक पहल पर सुंगधित स्नेह जल बिखराकर,
एक तुम्ही से अपना प्यार जताने को मन करता है।

2. आंचल में जो छिपा रखा है तुमने चांद सा चेहरा,
पास आकर होले होले पर्दा उठाने को मन करता है।

3. उम्र के अंकुरित उपवन में फूलों की कोमलता लिए,
ज़िंदगी भर साथ संग सेज सजाने को मन करता है।

4. मौत के साए में न जाने कब बिखर जाएं उम्र के मोती,
जीवन के अंतिम क्षण तक नेह निभाने को मन करता है ।

"ग़ज़ल"

रेत पर जो बनाया था घर, याद कर,
पानी की तेज़ उठी थी लहर, याद कर।

1. बात जो कहनी थी अधूरी रह गई,
जो बिसतरा, नया नाम देकर, याद कर।

2. गीत जो जन्मो से रचते आए हैं,
जो मन भाए वो लय वो स्वर, याद कर।

3. अपनो से मिले जख़्म चुपचाप सहे जा,
आंख छलके तो दर्द का असर याद कर।

4. सपने तो इच्छाओं का अहसास, है,
प्यार की मीठी नज़र उम्र भर याद कर।

"ग़ज़ल"

प्यार महोबत से परे कुछ और भी है सोचना,
मानव मन में छुपी हुई उज्जवल किरण है खोजना।

1. जीवन के हर मोड़ पर है अनगिनत कहानियां,
निर्भय हो कर कदम अपने मंजिल की तरफ मोड़ना।

2. मत सोचा कर भाग्य समुख मजबूर है आदमी,
काल चक्र से बंधी स्वयं किस्मत को है खोलना।

3. चूंकि दुनिया तो रंग बदलने में बड़ी माहिर है,
इस बदलते स्वरूप में सोच समझकर बोलना ।

4. दर्द दिल में रहने दो और मस्ती में जीना सीखो,
हर कठिन रिश्ते को बड़ी समझदारी से तौलना ।

मुक्तक

पृष्ठ 68 से 80

पचास मुक्तक

1

मेरी कविता में निमंत्रण है तो दर्द भी है,
रूप की कशिश है तो प्रतीक्षा की गर्द भी है,
मादक मुस्कान के साथ वेदना के तार भी,
किसी शब्द में महक तो कई गीत सर्द भी हैं।

2

जीवन में गर सुख है तो दुखों की भरमार भी है,
आंसुओं का वास्ता है तो प्यार की पुकार भी है,
रिश्तों का आकलन ही जीने का मूल मकसद हो,
क्यों कि कहीं मनुहार हैं तो कहीं दुत्कार भी है।

"मुक्तक"

3

बूंद की रचना होती है तपते हुए जल कण से,
राह की रचना होती है बड़ते हुए चरण से,
समय गंवाने वालो, उठो तपो, चेत जाओ अभी,
वक्त फिसलता जाता है, हर पल हरेक क्षण से।

4

ज़िंदगी आग है - तपन की बात मत करना,
ज़िंदगी राग है - मिलन की बात मत करना,
ज़िंदगी की तो अनगिनत परिभाषाएं है,
ज़िंदगी क्या है - चिन्तन की बात मत करना।

5

संघर्षों के मुकाबले ज़िंदगी हार गया हूं,
सेज अपने लिए चिता की संवार गया हूं,
पहले तो सांसो में भी साध थी मेरी,
पर अब प्यार की साध भी दुत्कार गया हूं।

6

धूप जो खिले - किरण बन जाती है,
सांस जो चढे - मरण बन जाती है,
सत्य का ही नहीं जब यहां अस्तित्व,
प्रीत ही मन का - दर्पण बन जाती है।

"मुक्तक"

7

समय की चाल निराली उसकी रफ्तार अपनी है,
सफलता पाने के लिए समय की नस पकड़नी है,
जिंदगी तो मौत की कशमकश में रहती है हरदम,
लक्ष पाने वास्ते कदम से कदम की तार जुड़नी है ।

8

सोचने समझने से पहले कभी बहस न करना,
व्यर्थ ही जीवन बगिया को तहस नहस न करना,
रिश्तों को समझने से पहले स्वयं को सुलझाओ,
झूठे प्यार और दोस्ती पर कभी तरस न करना ।

9

आंधियां झोंपड़ी को जीर्ण कर देती है,
इच्छाएं मनुष्य को क्षीर्ण कर देती है,
अंधेरों से निकलकर मुक्त हास बिखराओ,
मुस्कान ज़िंदगी को पूर्ण कर देती है ।

10

किसी को उसकी औकात से कम नहीं आंको,
किसी के गिरेबान में भूलकर भी न झांको,
अपनी ही बात पर न अड़े रहो मेरे दोस्त,
खुशियों को छिपाओ नहीं मिल-जुलकर बांटो।

"मुक्तक"

11

सांसों के साथ साथ उम्र चढ़ती जाती है,
ज़िंदगी की नज़र में, उम्र बड़ती जाती है,
मस्त ज़िंदगी में विचरने वाले ज़रा सोच,
मृत्यू की नज़र में, उम्र घटती जाती है ।

12

आकांक्षाएं जिंदगी की पूर्ण नहीं होती,
इच्छाएं संघर्षों से कभी क्षीर्ण नहीं होती,
जीवन का चिंतन तो करना अति आवश्यक है,
क्योंकि कामनाएं साधना से जीर्ण नहीं होती ।

13

सोच लो पहले कदम तब आगे बढ़ाओ,
वक्त की पुकार को ठोकर न लगाओ,
मुसीबतें रोकर झेलो यां हंस हंसकर,
जीवन की अमूल्य निधि, सोकर न गंवाओ।

14

मन की एक कसक, भावना में ढली जाती है,
तन की एक महक, साधना में पली जाती है,
शून्य में रहकर मत यूं घबरा मेरे दोस्त,
कहानी स्वयं की आराधना से छली जाती है ।

“मुक्तक”

15

सबको समान समझना ही व्यवहारी है,
सब में प्यार बांटना ही समझदारी है,
स्वयं को सदा औरों के काबिल बनाओ,
जिंदगी कुछ नहीं, मौत की उधारी है ।

16

अपनी बात से जग को भरमाओ मत,
सुनो सबकी किसी को झुठलाओ मत,
यहां हर एक को अपनी बात रखनी है,
झूठे वादों से मन को बहलाओ मत ।

17

शांत मन से चित लगाकर सुनो सब की,
करो मगर ज्यों चाहो अपने मन की,
दुनिया तो कहेगी, कहते रहने दो,
चाहो भला सबका, करो बात अमन की ।

18

बात बात पर, बात निकल आती है,
छोटी सी बात दिल में पिघल जाती है,
वक्त की कीमत कौन आंक सका है,
किसी भी पल सरकार बदल सकती है ।

"मुक्तक"

19

मन निर्मल है तो होंगे पछताव के आंसू,
दर्द से भीगे रहते हैं- अलगाव के आंसू,
प्रतीक्षा के पलों में जब पी की चिठी आए,
मिलने को छल छल छलके बदलाव के आंसू ।

20

जिसे मरने का डर नहीं ऐसा हज़ारों में एक है,
जिसे न हो जीने का मोह ऐसा लाखों में एक है,
कष्ट भरे जीवन को कठोर अहसासों को समझकर,
जो हंसते जीना सीख ले ऐसा करोड़ों में एक है ।

21

चलाचली की ज़िंदगी मंज़िल बहुत दूर है,
अहंकार के नशे में हर कोई चूर है,
किसी की बात कोई सुनने को तैयार नहीं,
पर अपना पक्ष सदा रखने को मजबूर है ।

22

विश्वासों से ही प्यार पला करता है,
भावनाओं में ही दुलार ढला करता है,
विश्वास न कर बहते अश्रुओं पर कभी,
आंसुओं से ही संसार छला करता है ।

"मुक्तक"

23

भीख मांगने के अनगिनत तरीके हैं,
अफसर-भिखारी-नेता सब एक सरीखे हैं,
अफसर मांगे रिश्वत, भिखारी को तो भीख,
उनके ऊपर नेता, दे कमीशन की सीख ।

24

केश काले करने से कोई जवान नहीं होता,
उच कुल में जनमने से कोई विद्वान नहीं होता,
ऊपर उठने के लिए आवश्यक है सत्य की सीढ़ी,
सिर्फ चुनाव जीतने से कोई महान नहीं होता ।

25

आजकल कार्यालयों में काम होता नहीं,
बिना रिश्वत लिए कोई कार्य करता नहीं,
इतने नीचे गिर चुके हैं सरकारी लोग,
अपनो का भी काम बिन पैसे होता नहीं ।

26

हम हादसों को स्वयं ही निमंत्रण देते हैं,
बिना सोचे मौत को भी आमंत्रण देते हैं,
हर बात को सहज समझना समझदारी नहीं,
फिर क्यों बच्चों को वाहन का नियंत्रण देते हैं ।

"मुक्तक"

27

दर्द सीने में छिपाए जीने की आदत है,
पीर पहलू में समाकर पीने की आदत है,
रिश्तों के सिलसिले बहुत कठिन हैं निभाना,
इसलिए ज़ख्म बार बार खाने की आदत है ।

28

संघर्षों के मुकाबले ज़िंदगी हार गया हूं,
सेज अपने लिए चिता की संवार चुका हूं,
पहले तो सांसों में भी साध थी तेरी,
पर अब यार की साध भी दुत्कार रहा हूं।

29

मैं तमाम उम्र विचरता रहा सपनों के लोक में,
न किसीकी खुशी में शरीक हुआ न किसी शोक में,
मेरे लिए तो मंदिर मसजिद गिरजा सब समान है,
अफसोस मेरी दुआ न यहां फली न परलोक में ।

30

एक एक कर चले गए मुझे अकेला छोड़ कर,
चुपचाप चलते बने सब अपनी चादर ओड़ कर,
भीड़ भरे इस जीवन में मैं तनहाई का मारा,
नए जाम भरने पड़ेंगे, पुराने सब तोड़ कर ।

"मुक्तक"

31

उसकी तस्वीर मेरे दिल की जागीर है,
थोड़ा जो साथ मिला तो बदली तकदीर है,
अधरों के स्पर्ष से स्नेह फूल खिलते हैं,
प्यार का प्रस्ताव मन के जोड़ की ज़ंजीर है।

32

धीरे से दिल में उतर गया कोई,
सांस बन सांस में बिखर गया कोई,
अधरों पर अब तो धूम मची गीतों की,
काजल बन नयन में निखर गया कोई।

33

तुम हो तो मैं हूं, तुम नहीं तो कोई नहीं,
तेरे पास होने से मैं कभी रोई नहीं,
दिल के शीशे में बस तेरी ही तस्वीर है,
तेरी ही प्रतीक्षा में, रात भर सोई नहीं।

34

मैं जब भी जहां भी जितने भी जाम पियूंगा,
बिठाए आगोश में तुमको, हर शाम पियूंगा,
चाहे कैसा भी मौसम हो दिन हो या रात,
हर बार ले लेकर तुम्हारा नाम पियूंगा।

"मुक्तक"

35

अपनो से मिले गम हम किसको कहें,
खाए जो दिल पे ज़ख्म वो कैसे सहें,
भूलकर भी अधरों पर हंसी आती नहीं,
इतनी घुटन, हर रात आंखों में बहे ।

36

बहुत सोचा किस किस का मैने दिल दुखाया है,
शब्दों के सुनहरे जाल में किसको फंसाया है,
दुनिया वही लोग वही, सदियों से फितरत वही,
याद नहीं, मैने कभी किसी का मन रुलाया है ।

37

प्यार से ही प्यार पलता रहता है,
यार ही यार को छलता रहता है,
पीर, दर्द और अलगाव के क्षणों में,
अश्रु बन नयनों से ढलता रहता है ।

38

ज्यों ज्यों रात बढ़ती है, ज़ख्म सहलाए जाते हैं,
यादों के सिलसिले अंदर तक गहराए जाते हैं,
इतना आसान नहीं हर चाह का पूर्ण ही होना,
विष भरे जाम, प्यार के नाम पिलवाए जाते है ।

"मुक्तक"

39

घाव पुराने सब खोलकर, उधेड़ता हूं,
यादों के संग जीता हूं और मरता हूं,
विश्वास है, टूटे रिश्ते सभी जुड़ जाएंगे,
नीर नयन में भरे हंसता और गाता हूं ।

40

मरने के बाद सब कहानी बन जाते हैं,
फ्रेम जड़े तस्वीर की निशानी बन जाते हैं,
ऐसा कुछु करो कि भूल न पाएं तुमको,
सही सोच व कर्म से लोग ज्ञानी बन जाते हैं ।

41

यह कैसा तुमने दर्द दिया जिसका उपचार नहीं है,
प्यार चाहने पर ज़ख्म मिले, यह व्यवहार नहीं है,
मैंने तो मन दर्पण में चाही थी छवि तुम्हारी,
यह तो सरासर अन्याय है तेरा, इकरार नहीं है ।

42

हर आत्मा की मंज़िल मिलन नहीं होती,
हर सरिता स्वर्ग का चरण नहीं होती,
यह अधिकार तो गंगाजी को प्राप्त है,
बिना प्यार दिल में धड़कन नहीं होती ।

"मुक्तक"

43

दर्द होगा स्वयं ही शूल याद आएंगे,
कांटे पहले, फिर फूल याद आएंगे,
सबका आपस में इक गहरा सम्बन्ध है,
नाव के सफर में कूल याद आएंगे ।

44

अनजाने ही मन जब कभी दुखी होता है,
तो यादों के घरौंदे टूटने लगते हैं,
नयनों में भर आते हैं अश्रुओं के मोती,
वेदना के स्वर, गीत बन फूटने लगते हैं ।

45

मानव की मानवता जगाओ एक बार फिर,
इस कलयुग को सतयुग बनाओ एक बार फिर,
पीढ़ियों से नींद में जो सो रहे हैं अब तलक,
प्रेम धुन सुना उनको जगाओ एक बार फिर ।

46

अपने लिए नहीं, औरों के लिए जीना है,
अपना सुख बांटकर गैरों का गम पीना है,
मौत के स्वागत में तत्पर रहना है हरदम,
बार बार नहीं मुझे एक बार मरना है ।

"नव वर्ष - मुक्तक"

47

नूतन नूतन दीप जले जो,
उन दीपों का लो अभिनंदन,
जग की नव अभिलाषाएं लो,
नव वर्ष का स्वीकार निमंत्रण ।

48

मंगल मय हो सबका जीवन,
सबके आंगन हो हरियाली,
घर घर में हो सुख और शांति,
मुखमंडल पर दमके लाली ।

49

दीपों को जलने दो - द्वार द्वार सजने दो,
रंगरंगी दीवाली को - अंगो में घुलने दो,
स्वीकार कर स्नेह प्रिय - नयनों से कहने दो,
दीवाली की शुभ इच्छा - देने दो, लेने दो ।

50

विश्व भर में जो आती प्रथम किरण,
उस किरण का अभिनंदन स्वीकारना,
दीवाली के दीप जले जो द्वार तुम्हारे,
उन दीपों की दीपशिखा सी मुस्कान ।



परिचय

नाम : मुरली नाराइणदास गोविन्दाणी

जनम : 15-07-1948-अजमेर

शिक्षा : बी.ए. (हिन्दी साहित्य), राष्ट्रभाषा कोविद

व्यवसाय : निवृत प्रबन्धक (भारतीय खाद्य निगम)

पत्ता : एस. ए. एक्स-34,
आदीपुर-370205 (कच्छ) गुजरात.
दुरभाष : 02836-261150

साहित्य के संदर्भ में :

(१) प्रकाशित पुस्तक : (१) करुणा उपहार (हिन्दी कविता)
(२) मूक निमंत्रण (हिंदी कविता)
(३) मन दर्पण (हिन्दी कविता)
(४) रिश्तन जो मरमु (सिन्धी ग़ज़ल)
(५) महकियल मुर्क (सिन्धी कविता)
(६) उड्डाम (सिन्धी कविता)

(२) आकाशवाणी का मान्य कवि।

(३) हिन्दी त्रिमासक पत्रिका "अर्चना" का दो वर्ष तक सम्पादन।

(५) विविध पत्रिकाओं में कविताएं व कहानियां प्रकाशित।

(६) कई कवि समेलनो में कविताओं का पठन।